केवलानंद काण्डपाल
kandpal_kn@rediffmail.com

कक्षा में किस प्रकार व्यवहार में लाई जाए पाठ्यपुस्तक
(सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन-1 कक्षा 6 के लिए सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक के विशेष सन्दर्भ में)

सार

भारत में स्कूली व्यवस्था के विवेचनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है की यह एक प्रकार की कठोर व्यवस्था के अंतर्गत संचालित हो रही है। यह इस प्रकार की शिक्षा उपलब्द्ध करा रही है जिसमें पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को विकसित करने की पद्धतियाँ परीक्षा प्रणाली के पैटर्न और जरूरतों पर आधारित हैं न कि शिक्षा के लक्ष्य, अधिगम की जरूरतों एवं बच्चे के सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवेश जैसी मिली-जुली कसौटियों पर। पाठ्यचर्या को अति सरल शब्दों में अभिव्यक्त किया जाए तो कहा जा सकता है कि 'पाठ्यचर्या शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने की योजना है, जिसमें शैक्षिक उद्देश्यों के मद्देनज़र अधिगमकर्ता की दृष्टि से प्राप्य ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति संबंधी मूल्यों का विवरण दिया गया होता है। इसके साथ-साथ इसमें पाठ्यक्रम, पाठ्य सामग्री, शिक्षण विधियों एवं मूल्यांकन के तौर-तरीकों के बारे में स्पष्ट निर्देश समाहित होते हैं।' पाठ्यक्रम यह बताता है कि विषयवस्तु के हिसाब से क्या पढ़ाया जाए और किस विशिष्ट उद्देश्यों के मद्देनज़र किस तरह के ज्ञान, कौशल और अभिवृत्तियों को ख़ास बढ़ावा मिले। पाठ्यपुस्तक बच्चे के अनुभवों को व्यवस्थित ज्ञान में बदलने का एक साधन है, इसमें बच्चे की कक्षा के स्तर के अनुरूप विषय सामग्री एवं गतिविधियों को बच्चों के मनोवैज्ञानिक स्तर एवं शिक्षणशास्त्रीय सिद्धांतों के आधार पर व्यवस्थित किया जाता है। वर्तमान परिदृश्य में न चाहते हुए भी पाठ्यपुस्तकों ने हमारी शिक्षा प्रणाली में केन्द्रीय स्थान प्राप्त कर लिया है। अतः अध्यापक के लिए पाठ्यपुस्तक को इस तरह से उपयोग में लाना ज़रुरी है की विषय की पाठ्यचर्या के अधिकतम संभव उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके, इसके दृष्टिगत इस आलेख में यह जानने-समझने का प्रयास किया गया है कि कक्षा 6 में सामाजिक विज्ञान विषय की एक पाठ्यपुस्तक 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन-1' को कक्षा में कैसे व्यवहार में लाया जाए।

प्रस्तावना

वस्तुतः "पाठ्यचर्या शैक्षिक उद्देश्यों को क्रियान्वित करने की योजना है।"[1] पाठ्यचर्या बच्चे के सीखने को सुगम बनाने की एक योजना है। यह योजना शुरू होती है वहां से जहाँ पर बच्चा होता है। इसलिए पाठ्यपुस्तक को बच्चों के अनुभवों को समाहित करके ज्ञान को व्यवस्थित करने का एक मददगार साधन होना चाहिए। पाठ्यचर्या के द्वारा निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए जरुरी है कि प्रत्येक विषय के सन्दर्भ में बच्चे के ज्ञान, कौशल एवं मूल्यों/ अभिवृत्ति के दृष्टिगत निम्न बदलाव हों-

(अ) विषय की विषयसामग्री का उपयोग करते हुए बच्चे की अवधारणात्मक एवं प्रक्रियात्मक समझ पुख़्ता हो अर्थात अधिगमकर्ता अपने अनुभवों का उपयोग करते हुए अपनी समझ विकसित करें और अपने लिए अर्थ निर्मित करें, ज्ञान का निर्माण करें।

(ब) बच्चे में विषय से सम्बंधित कौशलों का विकास हो तथा इन कौशलों का उपयोग बच्चा अपने दैनिक जीवन में उपयोग कर सके।

(स) विषय से सम्बंधित मूल्यों एवं अभिवृत्तियों का बच्चे में बीजारोपण हो तथा ये उसके व्यवहार में परिलक्षित हों।

यदि किसी विषय की पाठ्यचर्या बच्चे में उपरोक्त बदलाव की अपेक्षा करती है तो इसके लिए पाठ्यपुस्तक के शिक्षण के अलावा भी बहुत कुछ किये जाने की आवश्यकता होगी, मसलन बच्चों के अनुभवों को ज्ञान में व्यवस्थित करना होगा, कुछ प्रयोग, अवलोकन, सर्वेक्षण, निरीक्षण करने होंगे, चर्चा, बातचीत, विचारों का आदान-प्रदान करना होगा आदि-आदि। इसका मतलब यह है कि पाठ्यपुस्तक एक सीमा तक ही इसमें मददगार हो सकेगी। पाठ्यपुस्तक से बाहर निकलकर भी बहुत कुछ करने की जरुरत रहेगी। संभव है कि ऐसी कुछ गतिविधिया पाठ्यपुस्तक में दी भी गयी हों, यदि नहीं भी दी गयी हैं तो विषय अध्यापक को इसका नियोजन करने की जरुरत हमेशा बनी रहेगी। वस्तुतः विषय शिक्षण के क्रम में बच्चे के व्यवहार में अपेक्षित बदलाव लाने की दृष्टि से बच्चे के ज्ञान, कौशल एवं मूल्यों/ अभिवृत्तियों में बदलाव लाना है। निश्चित रूप से इसके लिए मूल्यांकन की प्रक्रियाओं में बदलाव करने की जरुरत होगी। वर्तमान मूल्यांकन प्रणाली की विसंगति पर प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार ने बहुत ही अर्थपूर्ण बात कही है "परीक्षा की पूंछ पाठ्यक्रम का शरीर हिला रही है।"[2] इस कथन के गंभीर निहितार्थ हैं और यह इस बात का संकेत देती है कि विद्यालयों में पाठ्यक्रम इस तरह से पढ़ाया जाता है कि बच्चे परीक्षा में पास हो सकें, अच्छे अंक ला सकें। इसके लिए पाठ्यपुस्तक की विषय सामग्री को इस तरह से बार-बार रटाया जाता है कि बच्चे परीक्षा में बिल्कुल वैसा ही लिख दें, जैसा कि पाठ्यपुस्तक में दिया गया है। इस प्रकार से पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम से महत्वपूर्ण परीक्षा हो जाती है और इस परीक्षा के चक्रव्यूह से निकालने में पाठ्यपुस्तक रक्षा कवच बन जाती है। 'पाठ्यपुस्तकों की समस्यात्मक भूमिका औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था से अद्भुत होकर आज तक जारी है। वर्तमान में पाठ्यपुस्तकों ने विद्यालय एवं कक्षाओं में एक अति पवित्र एवं सम्मानजनक स्थान बना लिया है और पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम की भूमिका को दरकिनार कर दिया है।' [3]

अधिकांशतः शिक्षिका/शिक्षक के पास कक्षा-कक्ष में किसी विषय को पढ़ाने के लिए केवल एक चीज़ होती है और वह है पाठ्यपुस्तक। ऐसे में पाठ्यपुस्तक पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम का एक मूर्त रूप बन जाती है। अब जितना भी हो सके इस पाठ्यपुस्तक को ही पढाया जाना है, इससे इतर जो भी है वह अपाठ्य है, उनुपयोगी है। पाठ्यपुस्तक को प्रयोग करने का यह तरीका एक ऐसी कक्षा प्रणाली स्थापित करती है, जिसमें पाठ्यपुस्तक को पूरा करना होता है, पाठ्यपुस्तक के कुछ खास हिस्सों को बार-बार बच्चों को पढ़ाकर याद कराया जाता है और पाठ के अंत में दिए गए प्रश्नों के उत्तरों को पाठ में दी गयी सामाग्री में से हूबहू लिखने का अभ्यास कराया जाता है, मूल्यांकन की एक विशेष व्यवस्था के कारण यह तरीका परीक्षा प्रणाली की संगति में फिट बैठता है। इस प्रकार से पाठ्यपुस्तकें कक्षा में पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या को दरकिनार करके प्रतिष्ठित दर्जा प्राप्त कर लेती हैं। पाठ्यपुस्तक को इस नजरिये से देखने की प्रवृति चिंताजनक है। 'एकमात्र पाठ्यपुस्तक को ही पाठ्यचर्या से जुडी सभी ज़रूरतों का प्रतीक मान लिया जाता है। विषय की पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए एकमात्र पाठ्यपुस्तक ही प्रयोग में लायी जाती है। बच्चे की सामाजिक, राजनीतिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विभिन्नताओं और विविधताओं पर ध्यान नहीं दिया जाता है।' [4] वर्तमान में देश के लगभग सभी स्कूलों में कक्षाओं की कार्य शैली एवं प्रक्रियाएं पूरी तरह से पाठ्यपुस्तकों पर निर्भर करती हैं, इसके परिणाम में विद्यालय की पाठ्यचर्या में पाठ्यपुस्तकों के महत्व का दायरा बढ़ना लाज़मी है।

वर्तमान परिदृश्य में पाठ्यपुस्तक की केन्द्रीयता का विश्लेषण आलेख के इस शुरूआती हिस्से में प्रासंगिक है। हमारे न चाहते हुए भी यह स्थिति तब तक बनी रहेगी, जब तक की परीक्षा प्रणाली में जरुरी बदलाव नहीं होते। अब हम शिक्षकों पर निर्भर है कि 'पाठ्यपुस्तक की केन्द्रीयता' की अनैच्छिक स्थिति में कम से कम पाठ्यपुस्तकों को कक्षा-कक्ष में इस प्रकार से, उपयोग में लाएं, जिससे बच्चे के ज्ञान, कौशल एवं मूल्यों/ अभिवृत्ति में अधिकतम संभव बदलाव लाया जा सके।

अब हम अपने मूल विषय पर आ सकते हैं। सामाजिक विज्ञान विषय के अंतर्गत समाज के विविध सरोकार शामिल होते हैं। इस विषय की अंतर्वस्तु में इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और मानवशास्त्र जैसे विषय वस्तु शामिल किए जाते हैं। सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या का लक्ष्य सामाजिक सच्चाई की समीक्षात्मक जांच-पड़ताल और उस पर प्रश्न करते हुए विद्यार्थियों में विवेचनात्मक जागरूकता का संवर्धन करना है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 इस बात पर ज़ोर देती है कि सामाजिक विज्ञान की अनुभूतियां एवं ज्ञान, एक समता मूलक और शांतिमूलक समाज का ज्ञान आधार बनने की दिशा में अपरिहार्य है। [4] उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय से अपेक्षा की जाती है कि स्वतंत्रता, विश्वास, परस्पर सम्मान और विविधता के प्रति आदर जैसे मानवीय मूल्यों का सुदृढ़ आधार तैयार करने का दायित्व निर्वहन करे। इस स्तर पर सामाजिक विज्ञान के शिक्षण का लक्ष्य विद्यार्थियों में मानसिक, तार्किक और नैतिक क्षमता का विकास होना चाहिए, जिससे वे अपने कार्यशील जीवन में उन सामाजिक शक्तियों से सावधान रह सकें जो इन मूल्यों के लिए ख़तरा साबित हो सकते हैं।

उत्तराखण्ड के विद्यालयों में वर्ष 2018 से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तकों को

लागू करने का निर्णय लिया गया। राज्य के विद्यालयों में कक्षा 6 में, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित निम्न तीन पाठ्यपुस्तकें लागू की गयी हैं-

1. हमारा अतीत (इतिहास की पाठ्य पुस्तक)
2. पृथ्वी हमारा आवास (भूगोल की पाठ्य पुस्तक)
3. सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन (राजनीति विज्ञान की पाठ्य पुस्तक)

उत्तराखंड के हमारे विद्यालयों में कक्षा 6 में पहली बार सामाजिक विज्ञान विषय को अलग से एक विषय के रूप में पढ़ाने की शुरुआत होती है। इससे पहले कक्षा 3 से कक्षा 5 तक हमारे आस-पास के रूप में विषय पढ़ाया जाता है, जिसमें हमारे आस-पास के विज्ञान, भूगोल एवं समाजिक-राजनीतिक जीवन को जानने-समझने पर जोर दिया जाता है। अतः सभी विषयों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण की विधियाँ भी इस तरह से मिलीजुली होती हैं कि विज्ञान, भूगोल, इतिहास, राजनीति विज्ञान एवं समाजशास्त्र जैसे विषयों के अनुकूल हों। कक्षा 6 में विज्ञान विषय अलग से पढ़ाया जाता है। सामाजिक विज्ञान विषय की प्रकृति विज्ञान विषय की तरह विशुद्ध रूप से प्रायोगिक नहीं होती तथापि सामाजिक विज्ञान विषय की प्रयोगशाला बच्चे के आस-पास का समाज होती है। इस प्रयोगशाला में सामाजिक विज्ञान विषय की विभिन्न अवधारणाओं, सिद्धान्तों, अभिलक्षणों की जांच-पड़ताल करते हुए विद्यार्थी अपनी समझ विकसित करते हैं, अर्थ निर्मित करते हैं, ज्ञान का निर्माण करते हैं और इसको वृहत्तर परिप्रेक्ष्य में लागू करने का हुनर प्राप्त करते हैं।

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान की विषय वस्तु क्या होनी चाहिए? इस बारे में भी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 स्पष्टता से संकेत करती है कि 'उच्च प्राथमिक स्तर पर, सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र से मिलती है। इतिहास में भारत के अलग-अलग हिस्सों में होने वाले विकास पर ध्यान दिया जाए, जिसमें विश्व के अन्य भागों में हो रहे विकास के खंड भी हों। भूगोल में पर्यावरण, संसाधन तथा स्थानीय से वैश्विक स्तर पर विभिन्न स्तरों के विकास के बीच संतुलन बिठाने का प्रयास किया जा सकता है। राजनीति विज्ञान में विद्यार्थियों का परिचय स्थानीय, राज्य और केन्द्रीय स्तर पर सरकार के गठन और उनके कार्यों और सहभागिता की प्रजातान्त्रिक प्रक्रियाओं से कराया जाए। अर्थशास्त्र विद्यार्थियों को आर्थिक संस्थानों; जैसे-परिवार, बाज़ार, और राज्य की समझ देने पर केन्द्रित हो।'[4]

इस आलेख में विवेचित कक्षा 6 में सामाजिक विज्ञान विषय की एक पाठ्यपुस्तक 'सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन-1' के सन्दर्भ में यह जानने-समझने की कोशिश की गयी है कि इस पुस्तक को कक्षा में प्रयोग करने के लिए क्या विशेष नज़रिया अपनाया जाए। उत्तराखंड में शिक्षा सत्र 2018-19 से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तकों को लागू करने का शासकीय निर्णय लिया गया। इसके प्रभावों का अध्ययन करने के लिए जरुरी समय अभी बहुत कम व्यतीत हुआ है और यह इस आलेख का मंतव्य भी नहीं है परन्तु इस शुरूआती दौर में भी इस विषय में काम कर रहे शिक्षकों की चिंताएं एवं सरोकार सामने आने लगे हैं, अतः यह जरुरी हो जाता है कि इसी आलोक में यह जांच-पड़ताल की जाए कि इस पुस्तक को कक्षा-कक्ष में बरतने का नजरिया क्या हो? मेरे विद्यालय के सामाजिक विज्ञान विषय के अध्यापक की चिंता है कि 'इस पुस्तक में तो प्रश्न बहुत कम हैं, गतिविधियां ही गतिविधियाँ हैं, आखिर विद्यार्थी परीक्षाओं में क्या लिखेंगे? (इस विषय में काम कर रहे अध्यापकों से, जिनसे मेरी इस विषय में बातचीत होती रहती है, के सरोकार भी कुछ इसी तरह के या मिलते-जुलते थे)। अतः यह उचित जान पड़ता है कि शिक्षणशास्त्रीय नज़रिए से इस पर विमर्श किया जाए।

सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन-1 पाठ्यपुस्तक मुख्यतः चार थीमों पर विकसित की गयी है, जिनको पुस्तक में इकाई कहा गया है, ये थीम निम्नवत हैं-

1. विविधता
2. सरकार
3. स्थानीय सरकार एवं प्रशासन
4. आजीविकाएं

चारों थीम (इकाईयों) में समिल्लित 9 अध्याय एवं पाठ्य वस्तु का निरूपण तालिका-01 में किया गया है-

तालिका-01

इकाई/थीम	अध्याय	अध्याय का शीर्षक	विषय-वस्तु
1. विविधता	अध्याय-1	विविधता की समझ	• अवधारणा • विविधता हमारे जीवन को कैसे समृद्ध करती है? • भारत में विविधता • हम विविधता को कैसे समझें? • विविधता में एकता
	अध्याय-2	विविधता एवं भेद-भाव	• पूर्वाग्रह • लड़के एवं लड़की में भेद-भाव • रूढ़िबद्ध धारणाएं बनाना • असमानता एवं भेदभाव • भेदभाव का सामना • समानता के लिए संघर्ष
2. सरकार	अध्याय-3	सरकार क्या है	• सरकार के स्तर • सरकार एवं क़ानून • सरकार के प्रकार • लोकतान्त्रिक सरकार
	अध्याय-4	लोकतांत्रिक सरकार के मुख्य तत्व	• भागीधारी की अवधारणा • भागीदारी के अन्य तरीके • समानता एवं न्याय
3. स्थानीय सरकार एवं प्रशासन	अध्याय-5	पंचायती राज	• ग्राम सभा • ग्राम पंचायत • पंचायत के तीन स्तर
	अध्याय-6	गाँव का प्रशासन	• गाँव में झगड़ा • पुलिस थाने का क्षेत्र • पुलिस थाने में होने वाला काम • राजस्व विभाग का काम • एक नया क़ानून (हिन्दू अधिनियम धारा, 2005) • अन्य सार्वजानिक सेवाएँ-राशन की दूकान, स्वास्थ्य केंद्र, दुग्ध उत्पादक समितियां
	अध्याय-7	नगर प्रशासन	• निगम पार्षद एवं प्रशासनिक कर्मचारी
4. आजीविकाएं	अध्याय-8	ग्रामीण क्षेत्र में आजीविका	• तमिलनाडु का एक गाँव-कल्लापट्टू • भारत के खेतिहर मज़दूर एवं किसान • नागालैंड की सीढ़ीनुमा खेती • ग्रामीण क्षेत्र में आजीविका के साधन
	अध्याय-9	शहरी क्षेत्र में आजीविका	• सड़को पर काम करना (सड़क किनारे दुकाने, रेहड़ी आदि)-बाज़ार में, बड़ी दुकानों में, फैक्ट्री में, दफ्तर में काम करना • बुढ़ापे के लिए बचत • छुट्टियाँ (दफ्तरों की छुट्टियाँ, राष्ट्रीय त्यौहार, इतवार) • परिवार के लिए विभिन्न सुविधाएं

पाठ्यपुस्तक को कक्षा-कक्ष में किस तरह उपयोग करें:

मूलभूत प्रश्न यह है कि पाठ्यपुस्तक एक साधन है, जिसके माध्यम से विषय की पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को प्राप्त करने की कोशिश की जाती है (पाठ्यपुस्तक से बाहर भी अनेक साधनों के उपयोग की ज़रूरत हमेशा बनी रहेगी, इसमें कोई संदेह नहीं है)। पाठ्यपुस्तक के आमुख में इस पुस्तक को किस प्रकार से उपयोग में लाया जाए, इसका संकेत दिया गया है "इस प्रयत्न की सफलता इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं।... शिक्षा के विविध साधनों एवं स्त्रोतों की अनदेखी किये जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है।" [5]

इसी पुस्तक में 'किताब का इस्तेमाल कैसे करें' के अंतर्गत इस पुस्तक को कक्षा-कक्ष में उपयोग में लाने के बारे में महत्वपूर्ण सूत्र दिए गए हैं-

- बच्चे, ठोस अनुभवों के माध्यमों से अच्छी तरह से सीखते हैं, अतः संस्थाओं और प्रक्रियाओं पर काल्पनिक वृत्तांतों, केस स्टडी या बच्चों के अनुभवों से जुड़े अभ्यासों के आधार पर चर्चा की जाए।
- अवधारणाओं का इस तरह से बच्चों से परिचय कराया जाए कि उनकी समझ बन सके, बच्चे तथ्यों एवं सूचनाओं तक सीमित न रहें। अतः पुस्तक में परिभाषाओं, सूचनाओं और तथ्यों को कम से कम परोसने का प्रयास है और विषय शिक्षक को कक्षा-कक्ष में इस बात का हमेशा ध्यान रखने की ज़रूरत है।
- कक्षा-कक्ष में बच्चों के अनुभवों को शामिल करने, उनकी जांच-पड़ताल करने, चुनौती प्रस्तुत करने की ज़रूरत होगी, जिससे यथार्थ से उन आदर्शों की ओर बढ़ा जा सके जो संविधान में निहित मूल्यों की संगति में हैं।

1. **पाठ की शुरुआत:** प्रत्येक पाठ की शुरुआत दो तत्वों से होती है। पहला-परिचयात्मक भाग, जो पूरे पाठ की संक्षिप्त झलक प्रस्तुत करता है कि पाठ में किन-किन मुख्य बिन्दुओं पर चर्चा की जायेगी। इस भाग में बच्चों की जिज्ञासा को बढाने के साथ-साथ उनके अनुभवों को कक्षा-कक्ष प्रक्रिया में जोड़ने की ज़रूरत होगी। यह उपक्रम ज्ञानसृजन के शिक्षणशास्त्र के लिए निहायत ज़रूरी भी है। प्रत्येक पाठ के शुरू में एक बड़ा चित्र दिया गया है और इसका एक ख़ास मंतव्य है कि इससे बच्चों को इस बात का अनुमान लगाने के मौके दिए जाएँ कि पाठ किस बारे में है? यहाँ यह भी कहना समीचीन है कि विषय शिक्षक को पाठ्यपुस्तक में दिए गए चित्रों एवं प्रश्नों के अलावा भी आवश्यकतानुसार अपने प्रश्न एवं चित्रों का इस्तेमाल करने की आवश्यकता होगी।
2. **पाठ के बीच में प्रश्न और अभ्यास:** पाठ के बीच में रंगीन ख़ानों में चर्चा के लिए कुछ मुद्दे, कुछ प्रश्न और कुछ अभ्यास दिए गए हैं। इसका मंतव्य है कि शिक्षक यह अंदाज़ा लगा पाएं कि विद्यार्थियों ने पाठ में चर्चित मुद्दों को कितना समझा? विद्यार्थियों ने अपने अनुभवों के आलोक में इन मुद्दों में निहित अवधारणाओं को कितना समझा? विद्यार्थी अभी तक पढ़े एवं समझे हुए पाठ का उपयोग अपनी चर्चा में किस तरह से करते हैं? ज्ञान सृजन के शिक्षणशास्त्र में यह भी ज़रूरी है कि सीखने-सिखाने के दौरान विद्यार्थी का सतत मूल्यांकन भी होता रहे। यह अभ्यास इस उद्देश्य की बहुत हद तक पूर्ति करते हैं। यहाँ यह भी उल्लेख करना जरूरी है कि चर्चा प्रश्न एवं मुद्दों को विद्यार्थी के सन्दर्भ में बदलने की ज़रूरत हमेशा रहेगी।
3. **अभ्यास:** परंपरागत शिक्षणशास्त्र में पाठ के अंत में प्रश्नों के माध्यम से बच्चे की समझ का आंकलन करने पर जोर दिया जाता रहा है परन्तु इस पाठ्यपुस्तक में पाठ के अंत में अभ्यास दिए गए हैं, जिसमें विद्यार्थी की समझ एवं इस समझ के अनुप्रयोग का आंकलन करना मुख्य उद्देश्य है। यदि विद्यार्थी पाठ में वर्णित एवं चर्चित मुद्दों एवं अवधारणाओं को ठीक से समझ पा रहा है तो निश्चित रूप से परीक्षा में दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख पाने में समर्थ हो सकेगा और उसे किसी विशेष प्रश्न के उत्तर रटने की आवश्यकता भी नहीं रहेगी। इसके लिए जरुरी है कि परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों की प्रकृति में भी आमूलचूल बदलाव लाये जाएँ।
4. **कथानकों का उपयोग:** इस पुस्तक में बहुत से काल्पनिक एवं यथार्थ कथानकों का उपयोग किया गया है। इनका उपयोग विद्यार्थियों में चर्चा को आगे बढ़ाना और अंर्तदृष्टि विकसित करने के लिए किए गया है। इससे विद्यार्थी स्वयं को कथानक से जोड़ सकेंगे। कुछ पाठों में विद्यार्थियों से अपने अनुभवों पर कथानक लिखने के लिए भी कहा गया है। ऐसा करने से विद्यार्थी की पाठ्य विषय की अवधारणात्मक समझ पुख्ता होगी। शिक्षकों को बच्चे के सन्दर्भ से जुड़े ऐसे काल्पनिक या यथार्थ कथानक तैयार करने की ज़रुरत भी होगी।
5. **छवियों का उपयोग:** पुस्तक में कई चित्र एवं तस्वीरें हैं। ये चित्र एवं छवियाँ पाठ्य विषयवस्तु का अभिन्न अंग हैं और विषय सामग्री को समझने के लिए इनका उपयोग करना होता है। इन पर चर्चा करने से बच्चों को ऐसी परिस्थितियों की

कल्पना करने में मदद मिलेगी जिनसे वे परिचित नहीं हैं। इसके अलावा भी पुस्तकालय, अख़बार, पत्रिकाओं और इन्टरनेट में सन्दर्भ के अनुकूल चित्रों एवं छवियों को इस्तेमाल करने के लिए विषय अध्यापक को अतिरिक्त प्रयास करने होंगे।

6. **भाषा में जेंडर संवेदनशीलता:** पुस्तक की सबसे सकारात्मक बात यह है कि पाठों में केवल स्त्रीलिंग रूपों एवं संबोधनों का इस्तेमाल किया गया है। यह भाषा के परम्परगत रूपों में बदलाव की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। इसका मकसद लड़कों या पुरुषों को पाठ्यपुस्तक से दरकिनार करना नहीं है वरन लड़कियों को किताबों में जगह देना है जो हमारी भाषा एवं कार्यक्षेत्र से एक तरह से बाहर की जाती रहीं हैं। यह भी सच है कि महज़ इस उपक्रम से यह बराबरी नहीं आ सकेगी, इसके लिए अध्यापक को कक्षा-कक्ष में निरंतर सजग एवं संवेदनशील बने रहना होगा, अपनी भाषा में, व्यवहार में और अपनी अंतःक्रिया में।

7. **अन्य साधनों का उपयोग:** राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 इस बात को बहुत ही सशक्त तरीके से रेखांकित करती है कि पाठ्यपुस्तक महत्वपूर्ण है लेकिन कक्षा में उपयोग में लाये जाने वाले कई साधनों में से एक साधन है। विषय अध्यापक को अन्य साधनों की तलाश करनी होगी, जुटाना होगा तथा सन्दर्भ के अनुकूल उनको पुनर्व्यवस्थित करना होगा। पाठ्य पुस्तक से बाहर अख़बार, कार्टून, पत्रिकाएं पढने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करना होगा। हमारे सरकारी स्कूलों के बच्चे इस मामले में बहुत ही अलाभकर स्थिति में हैं, उनकी पहुँच इन साधनों तक नहीं है और न ही उनकी सामर्थ्य है। अतः विषय अध्यापक को इस कमी को पूरा करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने होंगे। पाठ्यपुस्तक की केन्द्रीयता एवं अति पवित्रता की धारणा को तोड़ने के लिए यह बहुत उपयोगी उपक्रम होगा।

समेकन: इस प्रकार से यह पुस्तक चार थीमें एवं 9 अध्यायों में प्रस्तुत है। अध्याय एवं इनमें समाहित पाठ्यवस्तु चक्रीय (Spiralस्पाइरल) बुनी गयीं हैं। प्रत्येक थीम में पहले अवधारणात्मक समझ को विकसित करने का मंतव्य है, इसके बाद थीम से सम्बंधित मुद्दों को लिया गया है और इस पर विचार-विमर्श, चर्चा एवं गतिविधियाँ सुझाई गयीं हैं। गतिविधियों को बच्चे के स्थानीय सन्दर्भ में बदलने की आवश्यकता होगी और ऐसी स्वायत्तता शिक्षक को लेनी होगी। उदाहरण के लिए अध्याय 6 में पुलिस थाने का क्षेत्र एवं इनमें होने वाला काम। यदि बच्चा ग्रामीण क्षेत्र का निवासी है और वह क्षेत्र पुलिस थाना क्षेत्र में नहीं आता वरन पटवारी क्षेत्र में आता है तो पटवारी क्षेत्र एवं इनमें होने वाले काम को पाठ्यवस्तु बनाया जाना चाहिए। इसी प्रकार से अध्याय 6 में विद्यार्थी के क्षेत्र में उपलब्द्ध सार्वजनिक सेवाओं में (यदि पुस्तक में वर्णित सेवाएं उस क्षेत्र विशेष में उपलब्ध न हों) आंगनवाड़ी केन्द्र, ए.एन.एम. सेंटर के सर्वेक्षण को शामिल किया जा सकता है।

पाठ्य पुस्तक में लगभग हर अध्याय में अभ्यास के अंतर्गत गतिविधियाँ दी गयीं है। जिससे बच्चे को पाठ्य विषय में प्रस्तुत की गयी अवधारणाओं को समझने में मदद मिल सकती है।

उदाहरण के लिए

अध्याय 2 - रूढ़ीबद्ध धारणाओं को चिह्नित करना और उनको चुनौती देना।

अध्याय 3 – सरकार किस तरह से जीवन को प्रभावित करती है, इसकी सूची बनाना।

अध्याय 4 - विभिन्न विवादों एवं मुद्दों को सुलझाने के लिए सरकार की जरुरत पर चर्चा।

अध्याय 5 - अपने क्षेत्र या अपने पास के ग्रामीण क्षेत्र में पंचायत द्वारा किये गए किसी काम के बारे में यह पता लगाना कि यह काम क्यों किया गया? धनराशि कहाँ से आयी ? काम पूरा हुआ कि नहीं ?

अध्याय 6- पुलिस थाने में जाकर उसके काम एवं भूमिका को समझना (विद्यार्थी के सन्दर्भ विशेष में यह पटवारी चौकी भी हो सकती है)।

अध्याय 7- स्वच्छ भारत अभियान के तरीकों का अवलोकन, पोस्टर तैयार करना और विद्यालय में इसकी प्रदर्शनी लगाना।

अध्याय 8- अध्याय में दी गयी केस स्टडी के अनुसार शेखर एवं रामलिंगम की स्थितियों की तुलना करना।(विद्यार्थी के सन्दर्भ से जुडी केस स्टडी भी उपयोग में लायी जा सकती हैं)।

अध्याय 9- शहर के सन्दर्भ में विभिन्न काम एवं आमदनी वाले परिवारों की स्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन (बच्चे के सन्दर्भ के अनुकूल ग्रामीण क्षेत्र के लिए इस प्रकार का अभ्यास कराया जा सकता है)।

उपरोक्त अभ्यासों के कुछ उदाहरण हैं। इनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि ये अभ्यास विद्यार्थी को पाठ्य विषय की अवधारणात्मक समझ एवं उसके अपने जीवन में उपयोग के कौशल को विकसित करने की दृष्टि से बहुत ही ज़रुरी हैं। इसके साथ-साथ अध्यापक

को पाठ्यपुस्तक से भी बाहर निकलने की जरूरत को रेखांकित करते हैं। इस आलेख के शुरूआती हिस्से में उल्लेख किया गया है कि सामाजिक विज्ञान की प्रयोगशाला विद्यार्थी का तात्कालिक परिवेश/समाज है, जहाँ विद्यार्थी अवलोकन, चर्चा, बातचीत, साक्षात्कार, सर्वेक्षण आदि के माध्यम से पाठ्यपुस्तक में दिए गए तथ्यों, विचारों एवं सिद्धांतों का परीक्षण करके अपनी समझ को विकसित करता है।

अध्यापक पाठ्यपुस्तक से हटकर भी सोच सकें, इसके लिए दो बातें महत्वपूर्ण हैं। पहला-इस बात की स्पष्ट समझ कि पाठ्यपुस्तक केवल एक सुविधाजनक साधन है, जिसमें बच्चों से क्या-क्या सीखने की अपेक्षाएं हैं, उन बातों से सम्बंधित विषय सामाग्री का व्यवस्थित तरीके से किया गया एकत्रीकरण है और यह अंतिम भी नहीं है। बहुत बार इससे बाहर जाकर भी अध्यापक को सामग्री एकत्रित करनी पड़ेगी, जुटानी पड़ेगी, विकसित करनी पड़ेगी। दूसरा-अध्यापक को इस बारे में निरंतर सचेत रहना होगा की विषय की पाठ्यचर्या के लक्ष्य क्या हैं ? पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक में क्या संकल्पनात्मक अंतर है? शिक्षक की इस बारे में समझ से बच्चों के अनुभवों को कक्षा-कक्ष प्रक्रिया में शामिल होने की संभावनायें बलवती होती हैं। इस प्रकार से पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के अनुभवों को ज्ञान में व्यवस्थित करने का साधन बन जाती है और विद्यार्थियों की ज्ञान निर्माण प्रक्रिया में मदद कर सकती हैं। जरुरी नहीं कि पाठ्यपुस्तक सारे साल पढाई जाए और इसलिए भी जरूरी नहीं कि उसमें सारा पाठ्यक्रम हो। कोई भी अच्छी पाठ्यपुस्तक बच्चे के वातावरण की अन्य लोगों और सहपाठियों के साथ अंतःक्रिया करवाने वाली होनी चाहिए। वह एक मार्गदर्शिका के रूप में कार्य करे जिससे बच्चा सक्रिय रूप से पाठ, विचारों, वस्तुओं, वतावारवण और लोगों से अपने को जोड़ते हुए अपनी समझ का निर्माण कर सके। यह ऐसी न हो जो ज्ञान को अंतिम उत्पाद के रूप में बच्चों के दिमाग में भरने का काम करे।

आज देश के अधिकतर विद्यालयों में पाठ्यपुस्तकें कक्षा में हावी हैं। शैक्षिक नियोजन के कक्षा में पहुँचते-पहुँचते पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम के लचीले होने की सारी संभावनाएं तथा शिक्षक की आजादी की संभावनाएं कहीं गुम हो जाती हैं। शिक्षक को या तो अयोग्य या निरुत्साहित समझा जाता है या फिर दोनों, विद्यालय को अधिगम सामग्री रहित समझा जाने लगता है और यह समझा जाने लगता है कि वातावरण बच्चों के अधिगम में किसी काम का नहीं। पाठ्यपुस्तकें इन सारी कठिनाईयों का एकमात्र हल समझी जाती हैं। वह सारा ज्ञान जो कक्षा में बच्चे से ग्रहण करने की उम्मीद की जाती है इसमें एकत्र किया जाता है एवं इस ज्ञान को नियोजित किया जाता है, ताकि बच्चे को इस ज्ञान के अतिरिक्त कहीं और देखने की ज़रुरत न पढ़े। इस कारण "पाठ्यपुस्तक को पढ़ाना, पर्याप्त शिक्षा माना जाता है। इस ज़रुरत से ज्यादा महत्व के कारण पाठ्यपुस्तक ने एक गौरवशाली और मानक रूपरेखा को अपना लिया है।..... पाठ्यपुस्तक प्रभुत्व का वह प्रतीक बन गयी है जिसे अवमानित करना कठिन है।"[6]

निष्कर्ष: उक्त पाठ्यपुस्तक अपने उद्देश्य एवं भावना में बहुत स्पष्ट है परन्तु फिर वही यक्ष प्रश्न सामने खड़ा हो जाता है कि जब परीक्षा में अधिकांशतः प्रश्न इस तरह से पूछे जाते हैं जो बच्चे की याददाश्त का मूल्यांकन करते हैं, रटने की प्रवृति को बढ़ावा देते हैं, विद्यार्थी को अपनी समझ को अभिव्यक्त करने के मौके नहीं देते है तो ऐसे में अध्यापक पुस्तक को एक विशेष तरह से उपयोग करने के लिए प्रेरित कैसे हो सकते हैं? अध्यापकों की यह चिंता कि 'पुस्तक में प्रश्न तो दिए ही नहीं गए हैं', वाजिब लगती है। इस वर्ष की परीक्षा के अनुभव भी इस मामले में बहुत सुखद नहीं रहे हैं। परीक्षा में पूछे गए प्रश्न पाठ्यपुस्तक की मंशा के एकदम विपरीत थे और विद्यार्थियों को इसके उत्तर लिखने में न्यूनाधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा।

दरअसल परीक्षा प्रणाली में मूलभूत बदलाव करने की जरुरत है लेकिन जब तक यह नहीं होता हम अध्यापक इतना तो कर ही सकते हैं कि पाठ्यपुस्तक को इस तरह से उपयोग में लाएं, जिसमें विद्यार्थी को अपने अनुभवों को जांचने-परखने के अवसर मिल सकें, विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक से बाहर निकलने के अवसर दें, विद्यार्थियों के लिए विषय की प्रयोगशाला (समाज) में अंतःक्रिया के अवसर निकालें और इस तरह से विभिन्न मुद्दों पर अवधारणात्मक समझ पुख्ता करने में मदद करें। यदि हम अध्यापक इतना करने में सफल हो जाते हैं तो विद्यार्थी परीक्षा में पूछे गए किसी भी प्रकार के प्रश्नों का जवाब लिखने में अवश्य सफल हो सकेंगे, एक विवेकशील एवं चिंतनशील नागरिक के लिए जरूरी कौशल भी प्राप्त कर सकेंगे और मुख्य रूप से यही इस विषय की पाठ्यचर्या का लक्ष्य है।

सन्दर्भ

1. क्रिस्टोफर विंच. 1999. शिक्षा दर्शन में मुख्य अवधारणाएं, रूटलेज, लन्दन, यू. के.।
2. कृष्ण कुमार, शिक्षा और ज्ञान, प्रथम हिंदी संस्करण 2002, ग्रन्थ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, लक्ष्मीनगर, दिल्ली।
3. पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें-राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, 2005, प्रथम संस्करण जनवरी, 2009।
4. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, 2006, प्रथम संस्करण मई 2006।
5. सामाजिक विज्ञान-सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन-1, कक्षा 6 के लिए पाठ्यपुस्तक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, 2006, प्रथम संस्करण मार्च, 2006।